आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

पशु पालन नए आयाम

परिकल्पना एवं निर्देशन - प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

वर्ष : 2 अंक : 11 बीकानेर, जुलाई, 2015 मूल्य : ₹ 2.00

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

कुलपति की कलम से...

पशुपालकों के लिए राजुवास की सलाहकारी हिदायतें महत्वपूर्ण हैं

प्रिय पशुपालक भाईयों।

पशुधन उत्पादन ग्रामीण अर्थ व्यवस्था का टिकाऊ आधार है। राज्य में पशुधन की निर्भर वर्षा आधारित है। अतः मानसून का समय पशुपालन के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है। राज्य के किसान और पशुपालकों ने अपनी मेहनत और समझदारी से मानसून की हर प्रकार की परिस्थितियों में भी पशुधन उत्पादन को वांच्छित स्तर तक बनाए रखा है। वर्षा आधारित कृषि के लिए फसलों के बीजों की उपलब्धता राज्य में सुनिश्चित कर ली गई है। इनमें से कई फसलों के अवशेष पशुचारे के रूप में उपयोग में लिये जाने लगे हैं। नहरी सिंचित क्षेत्रों में चारा उत्पादक फसलों की बुवाई भी किसानों ने सुनिश्चित कर ली है। राज्य में मानसून आधारित खेती और पशुपालन की स्थिति के मद्देनजर वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा पशुपालकों के लिए मानसून पूर्व जरूरी सलाह के साथ सावधानियां बरतने की हिदायतें जारी की गई हैं। पशुचिकित्सा विशेषज्ञों ने चारे की उपलब्धता सुनिश्चित रखने के साथ-साथ वर्षाकाल में होने वाले पशु रोगों से बचाव के लिए आवश्यक टीकाकरण व चिकित्सकीय उपाय करने को कहा है। **हरा चारा उत्पादन**–वर्षा में कमी की स्थिति में चारागाहों में घास की उपलब्धता कम हो सकती है। इससे हरे चारे एवं सूखे चारे के उत्पादन में कमी की स्थिति चारे के भावों को प्रभावित कर सकती है। पशुपालकों को यह सलाह दी जाती है कि चारे की उपलब्धता अगले मानसून तक सुनिश्चित करें एवं आवश्यक हो तो इसका संग्रहण भी करें। जिन किसानों के पास सिंचाई के साधन उपलब्ध हैं, उन्हें हरा चारा उत्पादन को प्राथमिकता देनी चाहिये। कृषि एवं पशुपालन विभाग को चारा बीज वितरण पर अधिक ध्यान देना चाहिये ताकि हरा चारा उत्पादन के लिए बीज की उपलब्धता सुनिश्चित रहे।

पशुधन स्वास्थ्य– कमजोर मानसून की स्थिति में पशुओं में फास्फोरस एवं विटामिन-ए की कमी होने से उनके प्रजनन एवं उत्पादन पर असर पड़ता है। इस कमी को लवण मिश्रण एवं विटामिन 'ए' के टीकों द्वारा दूर किया जा सकता है। इस मौसम में यह आवश्यक है कि पशु स्वास्थ्य को बनाये रखने हेतु गलघोंटू एवं ठप्पा रोग के टीके लगवाये जायें। साथ ही चींचड़ों के प्रकोप को कम करने की आवश्यकता है जिसके लिए अनेक चींचड़नाशी दवाइयां बाजार में उपलब्ध हैं। सभी पशुओं को कृमिनाशक दवा देने की आवश्यकता है। **निष्क्रमण**– पशुधन में भेड़ एवं बकरियों का माइग्रेशन अकाल निवारण का उत्तम उपाय है। पशुपालन विभाग द्वारा माइग्रेशन मार्ग पर क्वारेन्टाइन, टीकाकरण एवं पशु स्वास्थ्य जांच की समुचित व्यवस्था करनी चाहिए। **पशु पेयजल**– पशुओं के पेयजल स्रोतों को चिन्हित किया जाना आवश्यक है। यदि उनके रखरखाव की आवश्यकता हो तो उसे समय पर पूरा कर लिया जाये। इससे आने वाले महीनों में पशु पेयजल की उपलब्धता बनी रहेगी। ग्राम पंचायतों, गौ-शालाओं एवं स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा पेयजल उपलब्धता बाबत प्रभावी कदम उठाये जा सकते हैं। **पशु रोग नियंत्रण**– कमजोर मानसून का प्रभाव पशुओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता पर भी पड़ता है जिसके कारण कई रोगों के आउट-ब्रेक की संभावना रहती है। विश्वविद्यालय द्वारा प्रतिमाह की 15 तारीख को अगले माह का पशु रोग पूर्वानुमान जारी किया जा रहा है। किसी भी आउट-ब्रेक की स्थिति में पशुपालन विभाग द्वारा विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों से संपर्क किया जा सकता है एवं आवश्यकता पड़ने पर विश्वविद्यालय के बीकानेर, जयपुर एवं वल्लभनगर स्थित कैम्पस से विशेषज्ञ दल पशु चिकित्सकों के सहायतार्थ भेजे जाने की व्यवस्था है।

पशुपालक भाईयों से गुजारिश है कि इन हिदायतों की पालना कर अपने पशुधन को समृद्ध बनाएं रखें।

(प्रो. ए. के. गहलोत)

।। पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारम् ।।

मुख्य समाचार

पशु नस्ल संरक्षण एवं नस्ल सुधार पर प्रशिक्षण शिविर आयोजित

बीकानेर। पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र कुम्हेर जिला भरतपुर द्वारा 17 जून को ग्राम माडेरा (डीग) में पशु नस्ल सुधार संरक्षण विषय पर एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में पशुपालकों को विभिन्न किस्म की स्थानीय दुग्ध उत्पादक गाय–भैंस की नस्लों,गुणों एवं दुग्ध उत्पादकता की जानकारी दी गई। राजस्थान जैसे उष्ण प्रदेश में पाई जाने वाली विभिन्न उन्नत दुग्ध उत्पादक स्थानीय गाय जैसे गिर, थारपारकर, साहीवाल व राठी को पाल कर उनके सरंक्षण के लिए प्राकृतिक अथवा कृत्रिम गर्भाधान द्वारा पशुओं को गर्भित कराने की पशुपालकों को सलाह दी गई। शिविर में 30 पशुपालकों ने भाग लिया।

गांवडी में पशुपालकों को प्रशिक्षण

बीकानेर। वीयूटीआरसी कोटा द्वारा 11 जून को ग्राम गांवडी (कोटा) में पशुओं में नस्ल सुधार द्वारा दुग्ध उत्पादन में वृद्धि के बारे में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 40 पशुपालकों ने भाग लिया।

ग्राम बीनासर (चूरू) में प्रशिक्षण आयोजित

बीकानेर। पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 10 जून 2015 को ग्राम बीनासर (चूरू) में –''पशुरोग प्रबंधन के बारे में जागरूकता'' विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में केन्द्र के प्रभारी ने पशुपालकों को पशुओं में होने वाली विभिन्न बीमारियों के बारे में जानकारी दी तथा बचाव हेतु टीकाकरण का महत्व बताया। शिविर में संरपच हनुमानसिंह की अध्यक्षता में 22 पशुपालकों ने भाग लिया।

बालरासर में पशुपालक प्रशिक्षण शिविर आयोजित

बीकानेर। पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 15 जून 2015 को ग्राम बालरासर (चूरू) में –''दुधारू पशुओं की गर्मी (मद) में नहीं आने की समस्या'' विषय पर प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में पशुपालकों को दुधारू पशुओं के गर्मी (मद या ताव) में नहीं आने के शारीरिक, आहार, वातावरण संबंधी तथा रोग विज्ञान बाबत विभिन्न कारणों के बारे में जानकारी दी। शिविर में 36 पशुपालकों ने भाग लिया।

अर्न्तराष्ट्रीय योग दिवस पर हुआ योगाभ्यास

बीकानेर। अर्न्तराष्ट्रीय योग दिवस पर विश्वविद्यालय के दीवान ए आम प्रांगण में शिक्षकों, विद्यार्थियों, कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में उपस्थित होकर योगाभ्यास किया। प्रो. बी.के.बेनीवाल, अधिष्ठाता ने अर्न्तराष्ट्रीय योग दिवस पर प्रधानमंत्री श्रीमान नरेन्द्र मोदी के संदेश का पठन किया। अर्न्तराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर वेटरनरी कॉलेज द्वारा महाविद्यालय विद्यार्थियों के लिए ''योग का जीवन शैली पर प्रभाव'' विषय पर निबंध लेखन प्रतियोगिता के विजेताओं को कॉलेज अधिष्ठाता ने प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया।

योग व्यक्ति के शारीरिक एवं मानसिक विकास की कुंजी है– कुलपति प्रो. कर्नल (डॉ.) गहलोत

बीकानेर। अर्न्तराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के स्टेडियम में एन.सी.सी.कैडेट्स के विशेष योगाभ्यास शिविर में मुख्य अतिथि के रूप में कुलपति प्रो. कर्नल (डॉ.) ए. के. गहलोत ने कहा कि योग प्राचीन परंपराओं की देन है जिसे आज पूरे विश्व भर में मनाया जा रहा है। योग क्रियाओं से व्यक्ति का शारीरिक और मानसिक विकास होता है साथ ही प्रकृति और पर्यावरण के अनुरूप ढालने में भी मदद मिलती है। एन.सी.सी के कमान अधिकारी कर्नल प्रदीप पूनिया ने कैडेटों को आह्वान किया कि वे योग को अपने जीवन में उतारें।

विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर शोध कार्य

अश्वों में घावों के प्रबंधन का शयनिक अध्ययन

वर्तमान अध्ययन में 40 अश्वों में त्वचा के घाव दर्ज किये गए उनमें से 12.50 प्रतिशत नर व 87.50 प्रतिशत मादा थी। त्वचा के घावों के समूहवार विश्लेषण से पता चला है कि उच्चतम विकार अग्रपाद क्षेत्र (35 प्रतिशत) में पाए गये उसके बाद क्रमशः पश्चपाद क्षेत्र (20 प्रतिशत), वक्ष व उदर क्षेत्र (17.50 प्रतिशत), सिर, गर्दन व पेक्टोरल क्षेत्र (15 प्रतिशत) और पूंछ व पेरिनेयल क्षेत्र (12.50 प्रतिशत) में पाये गए। सिर,गर्दन व पेक्टोरेल क्षेत्र में 6 मादाओं में घाव पाये गए। वक्ष व उदर क्षेत्र में कुल 7 मामले पाये गए जिसमें से 1 नर व 6 मादाओं में घाव पाये गये। अग्रपाद क्षेत्र में घावों के 14 मामले पाये गए जिसमें से 1 नर व 13 मादा थी। पश्चपाद क्षेत्र में घावों के 8 मामलों में 1 नर व 7 मादा थी। पूंछ व पेरिनेयल क्षेत्र में घावों के 5 मामलों में 2 नर व 3 मादा थी। सभी क्षेत्रों में सबसे ज्यादा घावों की घटनाएं ग्रेनुलेशन घावों की थी उसके बाद क्रमशः त्वचा के फटने वाले घाव, प्राउड फ्लेश, शयनिक घाव, साइनस, फोड़े और कृमि जनित घावों के थे।

वर्तमान अध्ययन के सभी समूहों में भवेत रूधिर कणिकाओं की संख्या नियंत्रण संख्या की तुलना में ज्यादा पायी गयी। अन्य रूधिर विज्ञान सम्बधी कारकों जैसे रूधिर वर्णिका, पी.सी.वी. व इ.एस.आर. की मात्रा नियंत्रण कारकों से भिन्न नहीं पायी गयी तथा जैव रासायनिक कारकों जैसे ए.एस.टी., ए.एल.टी., ए.एल.पी. व केटेलेज की मात्रा भी नियंत्रण कारकों से भिन्न नहीं पायी गयी।

उपस्थापना–निर्मल कुमार दाधिच, उपादेष्टा– डॉ. टी.के.गहलोत

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान-जुलाई, 2015

पशु रोग	पशु प्रकार	क्षेत्र
मुंह खुरपका रोग	गाय, भैंस, बकरी, भेड़	बांसवाड़ा, भरतपुर, जयपुर, धौलपुर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, दौसा, झुंझुनू, अनूपगढ़, सवाई माधोपुर, अलवर, सिरोही
गलघोंटू	गाय, भैंस	अलवर, धौलपुर, जयपुर, सवाई माधोपुर,दौसा, टोंक, बून्दी, राजसमन्द, पाली, सीकर, सिरोही
ठप्पा रोग	भैंस	अनूपगढ,जयपुर, बीकानेर, झुंझुनू, अलवर
पी.पी.आर	बकरी, भेड़	सवाई माधोपुर, श्रीगंगानगर,, हनुमानगढ़, चूरू, सीकर
फड़किया	बकरी, भेड़	सवाई माधोपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बांसवाड़ा, जयपुर, बीकानेर
सर्रा	ऊंट, भैंस	अनूपगढ, बांसवाड़ा, धौलपुर, हनुमानगढ़, बून्दी
चेचक	बकरी	बीकानेर, जैसलमेर, जयपुर, बाड़मेर
थाइलेरिओसिस, बबसिओसिस	गाय	बीकानेर,श्रीगंगानगर,हनुमानगढ, बांसवाड़ा, धौलपुर, बून्दी, अनूपगढ, चूरू
गोल–कृमि	गाय, भैंस, बकरी, ऊंट	बीकानेर, सीकर, धौलपुर,अलवर
फीता–कृमि	गाय,भैंस,भेड़,बकरी	सीकर, धौलपुर, उदयपुर
फेसियालिओसिस एवं एम्फीस्टोमिओसिस	गाय,भैंस,भेड़,बकरी, ऊंट	डूंगरपुर, कोटा, राजसमन्द, बांसवाड़ा, सवाईमाधोपुर, धौलपुर, भरतपुर, अनूपगढ़, सूरतगढ़,सीकर
खुजली	ऊंट	बीकानेर,जैसलमेर,झुंझुनू,बाड़मेर

इसके अतिरिक्त मुर्गियों में गमबोरो रोग, दीर्घ श्वसन रोग, कोक्सीडिओसिस (खूनी दस्त), गोल एवं फीता–कृमि, कोराइजा, एविएन ल्यूकॉसिस काम्पलेक्स, कोलिबेसिलोसिस (सफेद दस्त) आदि रोगों की सम्भावना है। मुर्गी पालकों से निवेदन है कि इस संबंध में विस्तृत जानकारी विशेषज्ञों से प्राप्त कर लें।

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. (डॉ.) बी. के. बेनीवाल, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर एवं प्रो. (डॉ.) अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग एवं प्रो. (डॉ.) ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास, बीकानेर । फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183

अपने विश्वविद्यालय को जानें

पशुधन उत्पादन एवं प्रबन्धन विभाग

विश्वविद्यालय का यह एक बहुआयामी विभाग है जो सीधे तौर पर पशुपालकों से जुड़ा है। इससे पशुधन से संबधित प्रबंधन तथा उससे होने वाले उत्पादन के बारे में पशुपालकों को विशेषज्ञ सेवाओं का लाभ मिल रहा है। विभाग में शैक्षणिक एवं शोध के साथ देशी गौवंश साहीवाल व कांकरेज के संवर्द्धन का कार्य भी किया जा रहा है। वर्तमान में इस विभाग में दो सुसज्जित प्रयोगशाला जिनमें पशुओं की नस्ल अनुरूप मॉडल,चार्ट तथा प्रबंधन में काम आने वाले उपकरणों को विद्यार्थियों के लिए रखा गया है। दो व्याख्यान कक्ष में विभाग के आचार्य व सहायक आचार्य द्वारा विद्यार्थियों को कक्षा शिक्षण कार्य किया जाता है। एक सेमीनार कक्ष जो आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित है, जहां समय समय पर पशुपालकों के प्रशिक्षण तथा सेमीनारों का आयोजन किया जाता है।

विभाग द्वारा अनेकों छात्रों को स्नातकोत्तर और वाचस्पति उपाधियों का अध्ययन करवाया जा चुका है। विभाग द्वारा कई अनुसंधान परियोजनाओं का संचालन किया गया है। वर्तमान में आर.के.वी.वाई. परियोजना में देशी गौवंश कांकरेज के संवर्द्धन व उन्नयन का कार्य चल रहा है। पशु जैव विविधता संरक्षण केन्द्र द्वारा पशुपालकों को जैव विविधता के महत्त्व तथा उसके संरक्षण के संबंध में समय समय पर प्रशिक्षण दिया जाता है। वर्तमान समय तक जैव विविधता संरक्षण केन्द्र द्वारा लगभग 150 से अधिक पशुपालकों का प्रशिक्षण किया जा चुका है। पशु जैव विविधता संरक्षण पर शोध कार्य चल रहा है। भेड़ व ऊन उन्नयन परियोजना के अर्न्तगत भेड़ पालकों को उन्नत भेड़ पालन से सबंधित नवीनतम जानकारी तथा उन्नत नस्ल की भेड़ें गरीब भेड़ पालकों को वितरित की जाती है जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हो। इस विभाग द्वारा कुक्कुट फार्म का व्यवस्थित रूप से संचालन किया जा रहा है। मुर्गियों पर अनेक प्रकार के शोध के साथ साथ विद्यार्थियों के शिक्षण व प्रशिक्षण हेतु कुक्कुट फार्म पर अनेकों नस्ल के कुक्कुटों का पालन किया जाता है। जिसमें प्रमुख है टर्की, ऐमू ,बटेर बतख आदि । कुक्कुट फार्म द्वारा आय के स्त्रोत के रूप में अण्डों व ब्रायलर व ऐमू का मांस उत्पादन किया जा रहा है।

पशुचिकित्सा व पशुविज्ञान में भौगोलिक सूचना प्रणाली (जी.आई.एस.) का महत्व

पशुधन भारत जैसे विकासशील देश के लिए बहुत मूल्यवान है। भारत में पशुपालन कृषि के लिए एक सहायक या पिछड़ा हुआ व्यवसाय न रहकर एक उद्योग के रूप में तब्दील हो गया है। देश की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार सकल घरेलू उत्पाद में पशुपालन क्षेत्र का योगदान अल्प निवेश के बावजूद काफी अधिक है। पशुपालन उन सीमांत किसानों के लिए एक बेहतर अवसर प्रदान करता है, जिनकी आय कृषि में मानसून की अनियमितता, कीट समस्याओं, निवेश में असमर्थता इत्यादि के कारण तेजी से घट रही है। पिछले कुछ दशकों से सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में जबरदस्त विकास हुआ है और यह विभिन्न उपायों के माध्यम से पशुओं के स्वास्थ्य में सुधार लाने की क्षमता रखता है जैसे कि प्रभावी रोगों का पूर्वानुमान, शीघ्र और सही रोग का निदान, आधुनिक चिकित्सा उपाय इत्यादि। सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के साथ ही भौगोलिक सूचना प्रणाली (जी.आई.एस.) का महत्व और उपयोग भी बढ़ा है। भौगोलिक सूचना प्रणाली का इतिहास 1960 से प्रारम्भ होता है, जब कम्प्यूटर पर जी.आई.एस. का उपयोग किया जाने लगा। भारत में भौगोलिक सूचना प्रणाली (जी.आई.एस.) का विकास पिछले एक दशक से बहुत तेजी से हुआ है और जी.आई.एस. के विकास में भारत के अंतरिक्ष विभाग का बहुत योगदान है।

भौगोलिक सूचना प्रणाली (जी.आई.एस.)क्या है!

भौगोलिक सूचना प्रणाली (जी.आई.एस.) एक ऐसी निर्णय लेने वाली कम्प्यूटरीकृत प्रणाली है जो समस्याओं के समाधान के लिए धरातलीय आंकड़ों को एकीकृत करती है और इन आंकड़ों का अभिग्रहण, पुर्नप्राप्ति,विश्लेषण तथा प्रदर्शन करती है।

भौगोलिक सूचना प्रणाली के उद्देश्यः

1. योजना तथा निर्णय लेने की क्षमताओं को बढ़ाना
2. आंकड़ों के वितरण तथा संचालन के लिए सफल साधनों की पूर्ति करना
3. आंकड़ा भण्डार से अनावश्यक आंकड़ों को हटाना तथा पुर्नरावृत्ति को कम करना
4. विभिन्न स्त्रातों से एकत्रित सूचनाओं को संग्रहित करने की क्षमता रखना
5. अति जटिल विश्लेषण करना

(शेष पेज 5 पर...)

बर्ड फ्लू : जागरूकता ही विकल्प

यह मुर्गियों में फैलने वाला विषाणु जनित रोग है जो कि मिक्सो–वायरस द्वारा होता है। इस रोग का विषाणु संक्रमित पक्षियों की बीट अथवा स्त्राव द्वारा हवा के माध्यम से सम्पर्क में आये स्वस्थ पक्षी अथवा मनुष्य में फैल सकता है। यह रोग अत्यंत घातक संक्रामक रोग हैं जिसमें पक्षी मृत्यु दर काफी अधिक होती है। सभी प्रजाति की मुर्गियां, जल–पक्षी, जंगली प्रजाति पक्षी तथा प्रवासी पक्षी इस रोग के वाहन एवं प्रसारण के लिए उत्तरदायी होते हैं।

मुर्गियों में रोग के लक्षणः– पक्षियों में छींक, खांसी के साथ आंख में पानी आना, चहरे एवं सिर में सूजन, भवास लेने में तकलीफ तथा भवास लेने पर घर्र–घर्र की आवाज आना, कलंगी आदि पर भी सूजन का पाया जाना इस रोग के मुख्य लक्षण है। साथ ही शरीर पर नील का मिलना, पंखों का झड़ना एवं रूखे हो जाना, पतले दस्त, मुर्गी की कलंगी पर नीले धब्बों का मिलना इस रोग के होने की पुष्टि करता है।

मनुष्यों मेंः– इस रोग के मानव में जो लक्षण मिलते हैं उनमें खांसी, बुखार, गले में जकड़न एवं खराश तथा मांसपेशियों में दर्द आदि है। आंख में पानी तथा न्यूमोनिया जैसे लक्षण भी देखने को मिलते हैं।

रोग का फैलावः– मनुष्य में यह रोग संक्रमित पक्षी के सम्पर्क में आने से होता है। कच्चे अण्डे व मांस के सेवन से भी यह रोग हो सकता है। अतः पूर्णतया पके हुए अण्डे एव मांस का ही सेवन करना चाहिए।

बचाव एवं रोकथामः– प्रभावी उपचार न होने पर बचाव ही इस रोग का उपचार है। किसी कुक्कुट फार्म पर कुक्कुट पालकों को बाहर से आने वाले पक्षियों का आवागमन सजग रूप से नियंत्रित करना चाहिए। किसी संशय की स्थिति में आवागमन बंद कर देना चाहिए। फार्म की साफ–सफाई, समय–समय पर जांच तथा खाली स्थान पर किटाणुनाशक स्प्रे का छिड़काव करते रहना चाहिए। फार्म में काम करने वाले कर्मियों के कपड़े एवं जूते अलग रखने चाहिए तथा प्रवेश–द्वार पर फुट–बाथ रखा जाना चाहिए। फार्म में मक्खी,मच्छर तथा चूहों आदि का प्रकोप न हो, यह भी सुनिश्चित करना आवश्यक है। पक्षियों के दानें,पीने के पानी अथवा रख–रखाव में अचानक कोई बदलाव नहीं करना चाहिए तथा प्रत्येक पिंजरे में अलग–अलग बर्तन काम में लेना चाहिए। यदि कोई बदलाव करना भी हो तो धीरे–धीरे करना चाहिए। अचानक बदलाव से मुर्गियां तनाव में आ जाती हैं जिससे उनके बीमार होने की आंशका बढ़ जाती है। पक्षी गृहों में पक्षी घनत्व कम हो तथा भाुद्ध हवा का आवागमन होना चाहिए। पक्षी गृहों में बिछावन आदि सूखा एवं फफून्द रहित होना चाहिए। मृत पक्षियों का निस्तारण भी सही वैज्ञानिक तरीके से जलाकर अथवा गहरा गड्डा खोदकर उसमें मृत पक्षी, उसका बिछावन, बीट अण्डा आदि डालकर चूने का छिड़काव कर जमीन में गाड़ देना चाहिए। जिन मुर्गियों में भवसन सम्बन्धित शिकायत मिले उनका उचित उपचार करावें तथा स्वस्थ मुर्गियों से उसे अलग रखें। यदि रोग की संभावना लगे तो कुक्कुट आहार में दी जाने वाली एन्टीबायोटिक की मात्रा बढ़ाई जा सकती है। यदि कोई पक्षी अकारण मृत मिले तो तुरंत नजदीकी पशुचिकित्सालय जाकर पोस्टमार्टम अवश्य करावें

– डॉ. रूचि पंचौरी, (मो.8385071308)
डॉ. आदित्य गोदारा, पशुचिकित्सा अधिकारी, बाड़मेर

(पेज 4 का शेष... जी.आई.एस.)

6. भौगोलिक आंकड़ों के जटिल विश्लेषण से नई नई सूचनाओं को प्राप्त करना

भौगोलिक सूचना प्रणाली का उपयोग मानव और पशु दोनों की गतिविधियों में व्यापक रूप से किया जा रहा है। पशुचिकित्सा के क्षेत्र में जी.आई.एस. का बढ़ावा पिछले कुछ दशक से हुआ है। आजकल विशेष सॉफ्टवेयर और इन्टरनेट पर उपलब्ध खुला स्त्रोत उपकरण की मदद से जी.आई.एस. मैपिंग की उपयोगिता और अधिक सस्ती और मैत्रीपूर्ण हो गई है। पशुचिकित्सा महामारी विज्ञान में, पशुओं के साथ ही खेत, पानी के स्त्रोत, चारागाहों, जंगल इत्यादि में मानचित्रण (जी.आई.एस.मैपिंग) का लाभ होना स्पष्ट है। भौगोलिक सूचना प्रणाली एक रोग के प्रकोप या महामारी फैलने की स्थिति में प्रबंधन करने में आसानी कर सकता है और यह संक्रामक रोगों के फैलाव को रोकने और निर्धारण करने में मददगार हो सकता है। इस लेख का उद्देश्य पशुओं और पशुओं की निगरानी के क्षेत्र में सम्भावनाओं और भौगोलिक सूचना प्रणाली की क्षमताओं का उपयोग व वर्णन करना है, जिसके कुछ उदाहरण हैं –

1. भौगोलिक सूचना प्रणाली पशुओं की बीमारियों का पर्यावरणीय व धरातलीय कारणों को समझने और उनकी व्याख्या करने में सहायता करता है।
2. यह आपातकालीन बीमारियों के फैलाव के समय संम्बधित विभाग अथवा कार्मिकों के व्यवहार को समझने में मदद करता है।
3. जी.आई.एस. के माध्यम से पशुपालन, पशुचिकित्सा विभाग, पशु चिकित्सा श्रमिकों और किसानों को पशुओं की बीमारियों की उपस्थिति, पशु संख्याओं, रोगों व अन्य घटनाओं के बारे में मानचित्रण द्वारा विश्लेषण कर उचित निर्णय लिये जा सकते हैं और बहु–स्तरीय योजनाएं बनाई जा सकती हैं।
4. जी.आई.एस. मानचित्रण की मदद से पशुपालकों की बेहतर सुरक्षा और निगरानी क्षेत्रों (सर्वेल्लेंस जोन) के साथ ही उपलब्ध सुविधाओं से सबंधित निर्णय लेना व उपायों को लागू करने के लिए काफी सहायता मिलती है। इसके अलावा जी. आई.एस. को विभिन्न कीटों की उपस्थिति एवं कीटजनित रोगों के बारे में जानकर पूर्व चेतावनी उपकरण(अर्ली वार्मिंग टूल्स) के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता है।
5. पशुओं की बीमारियों के नियंत्रण के लिए जी.आई.एस. मॉडलिंग भी की जा सकती है, जिसके आधार पर रोगों के नियंत्रण के लिए पूर्व योजनाएं बनाई जा सकती हैं।

– रवि कुमार (8003485684),
प्रो. ए.के.कटारिया, राजुवास, बीकानेर

वर्षाकाल में पशुओं को संभावित गलघोंटू रोग से कैसे बचायें ?

गलघोंटू रोग एक बहुत ही खतरनाक जीवाणुजनित रोग है जो बहुत ही कम समय में बहुत ज्यादा पशुओं को प्रभावित करने की क्षमता रखता है। यह रोग वैसे तो वर्ष के किसी भी माह व मौसम में संभव है,लेकिन प्रायः यह देखा जाता है कि वर्षाकाल में इस रोग से पशु ज्यादा प्रभावित होते है और मृत्यु दर काफी ज्यादा होती है।

मौसम में आये अचानक बदलाव, पशुओं को एक से दूसरे स्थान पर वाहन इत्यादि में ले जाने, ज्यादा दूरी तक पैदल चलाने अथवा ज्यादा बोझा ढोने की वजह से पशुओं में उत्पन्न तनाव की स्थिति में पशु के शरीर में रहने वाले पाश्चुरेल्ला नामक जीवाणुओं से संक्रमण के प्रति संवेदनशीलता बढ़ जाती है और पशु अल्प समय में रोगग्रस्त होकर मर जाता है। यह रोग गाय, भैंस, ऊंट,भेड़,बकरी व अन्य प्रजातियों में सभी उम्र के पशुओं को समान रूप से प्रभावित करता है। प्रायः यह देखा गया है कि अन्य बीमारी जैसे खुरपका–मुंहपका से प्रभावित पशुओं में यह रोग ज्यादा खतरनाक साबित होता है।

पशुपालक इस रोग को लक्षणों के आधार पर आसानी से पहचान सकते हैं। बीमारी की प्रारम्भिक अवस्था में पशु सुस्त हो जाता है, चारा खाना बंद कर देता है व तेज बुखार आता है। इसके बाद पशुओं के नाक से पानी गिरता है, श्वांस में तकलीफ होती है और गले के आस–पास सूजन आ जाती है जिससे पशु घर्र–घर्र की आवाज करता है और कुछ ही घंटों में पशु की मृत्यु हो जाती है। छोटी उम्र के पशुओं में कई बार बिना लक्षण आये ही पशु की मौत हो जाती है।

रोग से बचावः–

1. लक्षणों के आधार पर प्रभावित पशु को अन्य स्वस्थ पशुओं से तुरन्त अलग कर देना चाहिए और उसके चारे–पानी की व्यवस्था भी अलग से करनी चाहिए क्योंकि प्रभावित पशु की लार व मल इत्यादि से यह रोग दूसरे पशुओं में फैलता है।
2. उपरोक्त लक्षणों की अवस्था में पशुपालक को चाहिए कि वह तुरन्त पशुचिकित्सक से सम्पर्क कर शीघ्र पशु का इलाज करायें।
3. इस रोग से बचाव के लिए गलघोंटू के टीके उपलब्ध है जो मानसून शुरू होने से पूर्व सभी पशुओं में आवश्यक रूप से लग जाने चाहिए।
4. यदि पशुपालकों ने गलघोंटू का टीकाकरण नहीं करवाया है और पशुओं में गलघोंटू रोग नहीं आया है तो अभी भी टीकाकरण करवा सकते हैं।

– प्रो. (डॉ.) ए. के. कटारिया, एपेक्स सेन्टर,
राजुवास (मो. 9460073909)

सर्पदंश का पशुओं में उपचार

कई सांप पशुओं को काटकर या तो चोट पहुंचाते हैं या पशु की मृत्यु हो जाती है, इसका उपचार निम्न बातों पर निर्भर करता है –

1. किस पशु को सांप के द्वारा काटा गया है।
2. उस पशु की सांप के जहर के प्रति संवेदनशीलता कितनी है।

– सांप के जहर के प्रति संवेदनशीलता में घोड़े सबसे ऊपर आते हैं तथा संवेदनशीलता का क्रम इस प्रकार है –
घोड़ा > भेड़ > गाय > बकरी > श्वान (व मानव) > सूअर व बिल्ली

– जब जहरीला सांप भेड़ को काटता है तो लक्षण निम्नानुसार है
(1) पशु को निगलने में परेशानी, (2) जीभ को मुंह से बाहर निकालना (3) लार का गिरना (4) पेट के द्रव्य का नाक से बाहर निकलना (5) पशु का जमीन पर गिरना, (6) श्वसन तंत्र के निष्क्रिय हो जाने के कारण पशु की मृत्यु हो जाना।

– बकरी के लिए भी जहरीले सांप के काटने पर लक्षण भेड़ के समान ही होते हैं लेकिन सांप के जहर के प्रति संवेदनशीलता कम होती है तथा मृत्यु विषैले वाइपर के काटने पर होती है।

– मवेशी (कैटल) सांप के जहर के प्रति संवेदनशील होते हैं लेकिन इनमें मृत्यु एक से अधिक बार काटने पर (मल्टीपल बाइट) होती है। यह जहर की कितनी मात्रा पशु के शरीर में प्रविष्ठ हुई है, गाय व सांप के शरीर का आकार, उम्र व स्वास्थ्य पर भी निर्भर करता है। सांप के जहर का असर स्वस्थ गाय पर कमजोर गाय की तुलना में कम होता है।यह भी महत्वपूर्ण है कि कहाँ पर काटा गया है गाय के चरने के दौरान सिर, चेहरे व मजल क्षेत्र पर काटने पर गंभीरता पैरों पर काटने की तुलना में ज्यादा होती है तथा पशु के पैरों की गति (चाल) ''गूज स्टेपिंग'' प्रकार की हो जाती है।

अगर जहरीले सांप ने काटा है तो दो पूर्णतया स्पष्ट पंक्चर घाव के निशान दिखाई देते हैं जिनसे रक्त बहता हुआ नजर आता हैं तथा यदि जहरीले सांप ने नहीं काटा है तो वहां पर दांत के निशान नहीं दिखाई देते हैं।

उपचार

1. पशु को शांत रखें अन्यथा हृदय गति बढ़ जाने के कारण जहर पशु के शरीर से तेजी से फैल सकता है।
2. घाव में कभी भी चीरा नहीं लगायें।
3. ठंडा या गर्म सेंक नहीं करें क्योंकि यह बाद में उत्तकों को नुकसान पहुंचा सकता है।
4. जहरीले सर्पदंश का एक मात्र उपचार है – एन्टी स्नेक वीनम

डॉ. राजेन्द्र कुमार, टीचिंग एसोसिएट (मो.9413032068),
प्रो. अंजु चाहर, राजुवास, बीकानेर

युवा पैरावेट रोहिताश ने शुरू किया अपना काम

सफलता की कहानी

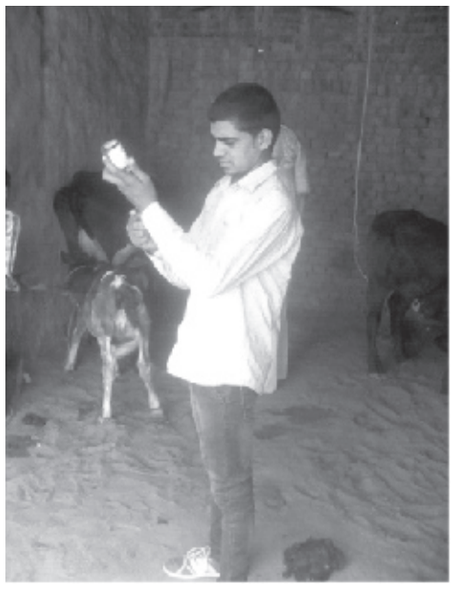

बढ़ती बेरोजगारी के इस दौर में अपने सपनों को साकार करना एक चुनौती है, जिसे केवल सरकारी नौकरी के भरोसे रहकर पार पाना मुश्किल है। जिसके इरादे बुलंद हों वह अपनी राह खुद आसान कर लेता है जिसका एक सफल उदाहरण बना है– गांव सरदारगढिया का नवयुवक रोहिताश घिंटाला । घिंटाला ने पैरावेट अर्थात सहपशुचिकित्सा को स्व–रोजगार के रूप में चुना और वह सफलतापूर्वक अपनी आजीविका कमा रहा है और दूसरों के लिए भी प्रेरणा का स्त्रोत बना है। 2012 में नोहर पशुपालन डिप्लोमा संस्थान से पशुधन सहायक का पाठ्यक्रम करने के बाद शुरू में एक बारगी तो रोहिताश हताश हुआ क्योंकि सरकारी नौकरी के लिए बड़ा इंतजार करना पड़ता। लेकिन फिर उसने मजबूत इरादों के साथ और कृषि विज्ञान केन्द्र से मिले तकनीकी एवं प्रसार सहयोग से आसपास के गांवों में सह–चिकित्सा का कार्य शुरू कर दिया। क्षेत्र के पशुपालकों से सम्पर्क के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र की गतिविधियों में भी भाग लिया तथा केन्द्र एवं राजुवास के अन्य वैज्ञानिकों से निरंतर सम्पर्क, लैब परीक्षण एवं अन्य अत्याधुनिक तकनीक एवं महत्वपूर्ण जानकारी से उसका काम सफल होता गया। आस–पास के गांवों के पशुपालकों ने इनके काम करने के अंदाज को खूब सराहा। उसमें कृत्रिम गर्भाधान से लेकर विभिन्न बीमारियों का सफलतापूर्वक उपचार करने की क्षमता बखूबी झलकती है। आज इसे अन्य पशुधन सहायक से भी ज्यादा तवज्जो मिलने लगी है और मासिक आय करीब 10 हजार रू. तक पहुंच गई है, जिससे वह पूरी तरह सन्तुष्ट है। घिंटाला का कहना है कि पशुपालकों के घर जाकर पशुओं की सेवा करने में जो खुशी मिलती है उसका तो कोई मोल ही नहीं। **–रोहिताश घिंटाला (मो.09460465184) –सम्पर्क सूत्र–डॉ. नवीन सैनी, केवीके–नोहर)**

ग्रीष्म ऋतु में दुधारू पशुओं को लू–तापघात से बचायें

ग्रीष्म ऋतु (मई–जून) के महिने में वातावरण का तापमान बढ़ जाता है। इसका प्रभाव पशुओं के सामान्य दिनचर्या पर पड़ता है। दुधारू पशुओं के लिए 25° फा. से 65° फा. का तापमान अच्छा रहता है। जब तापमान 80° फा.से 90° फा. हो जाये तब पशुओं की भूख कम हो जाती है। दुग्ध उत्पादन 3 से 20 प्रतिशत तक कम हो जाता है। भीषण गर्मी के मौसम में पशु को लू नामक रोग अर्थात हीट स्ट्रेस हो जाता हैं, जिसके लक्षण हैं–

1. पशु को तेज बुखार,तथा पशु सुस्त हो जाता है, खाना–पीना बंद कर देता है।
2. पशु खुले मुंह से सांस लेता है एवं जीभ बाहर लटका देता है।
3. पशु की श्वसन गति एवं नाड़ी गति तेज हो जाती है।

पशुओं को लू से बचाने के लिए इन बातों का ध्यान रखें–

1. गर्मी के दिनों में पशुओं को छायादार स्थान पर रखना चाहिए।
2. पशुओं के शेड्स के छत की ऊंचाई फर्श से 12 फुट रखें।
3. पशु आवास में गर्म हवाओं का सीधा प्रवाह नहीं हो, इसके लिए बोरी की टाट लगाकर रोका जा सकता है, तथा आवश्यकता होने पर बोरी के टाट को गीला कर दें जिससे पशु–आवास में ठण्डक बनी रहे।
4. प्रत्येक गाय को 40 वर्ग फीट जगह देना चाहिए। रात्रि में पशुओं को खुले स्थान पर बांधना चाहिए।
5. गर्मी के मौसम में पशुओं को हरा चारा अधिक खिलाना चाहिए।

6. पशु आहार में पर्याप्त मात्रा में खनिज मिश्रण और विटामिन मिलाएं,अच्छी किस्म का चारा खिलाएं।
7. आहार दिन के ठंडे समय के दौरान दें,ताकि तापमान बढ़ने पर गायों के शरीर से कम से कम गर्मी का उत्पादन हो।
8. दुधारू गायों के लिए हर समय भरपूर मात्रा में साफ, ताजा पानी उपलब्ध रखें। दिन में कम से कम तीन बार पानी पिलाना चाहिए। इससे पशु के शरीर के तापमान को नियंत्रित बनाये रखने में मदद मिलती है। इसके अलावा पानी में थोड़ा नमक व गुड़ मिलाकर पानी पिलाना भी उपयुक्त रहता है।
9. पशु को प्रतिदिन पानी से नहलाना चाहिए।

पशुओं को लू लगने पर इन बातों पर ध्यान देवें:

1. पशु को ठण्डे स्थान पर बांधें तथा सिर पर बर्फ तथा ठण्डे पानी की पट्टिया रखने से पशु को तुरन्त आराम मिलता है, तथा पशुचिकित्सक से तुरन्त सम्पर्क कर उपचार करवाना चाहिए।

प्रो. अन्जु चाहर (मो.7597741604)
डॉ. राजेन्द्र कुमार, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

बरसात में पशु प्रबंधन पर खास ध्यान दें

प्रिय पशुपालक भाईयों

जून–जुलाई में मानसून के सक्रिय होने के साथ ही बरसात का मौसम शुरू हो जाता है। जलवायु में आर्द्रता बढ़ जाने से रोगजनकों और बीमारी वाहक मच्छरों की प्रजनन क्षमता में वृद्धि हो जाने से पशुओं में रोगों का प्रकोप होने की संभावना प्रबल हो जाती है। ऐसी स्थिति में पशुधन संपदा में बीमारी या महामारी का प्रकोप हो सकता है। इससे बचने के लिए हमें पशुधन के प्रबंधकीय उपायों को मजबूत करने की ओर ध्यान देना होगा। वर्षा के कारण पशु आवासों के अंदर और बाहर के तापक्रम में अन्तर हो जाने से रोगजनकों की प्रभावशीलता को बढ़ने से रोकने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए पशुओं को पूरे पोषण के लिए संतुलित आहार दिया जाना चाहिए जिसमें प्रोटीन, ऊर्जा युक्त कच्चे रेशे, खनिज लवण व विटामिन युक्त खाद्य पदार्थ शामिल हों। जिससे पशुओं की रोग–प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि हो सकेगी। दूसरे उपाय के रूप में नियमित रिहायशी प्रबंधन पर ध्यान देना चाहिए। पशुओं के आवास साफ और सूखे होने चाहिए। विभिन्न पशु किस्मों के अनुरूप प्रकाश, ताप, आर्द्रता और रोशनदानों की व्यवस्था की जानी चाहिए। शुद्ध पेयजल की व्यवस्था कर किटाणु रहित आवास के लिए कीटनाशकों का छिड़काव आदि करने चाहिए। कचरा और मल आदि की सफाई पर पूरा ध्यान दिया जाना चाहिए। टीकाकरण रोगों से बचने का एक सटीक उपाय है। वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा प्रति माह पशु रोग पूर्वानुमान का बुलेटिन जारी किया जाता है। अतः इस माह होने वाले संभावित रोगों से बचने के लिए पशुओं के टीका लगाने की कार्यवाही अवश्य कर लें। पशुआहार में वर्षा के मौसम में प्रदूषण के प्रति भी सर्तकता बरतें तथा गुणवत्तायुक्त पशु आहार का ही उपयोग करें। पशुओं और कुक्कुटों में होने वाली कुछ बीमारियों के तेजी से फैलने और स्वस्थ पशुओं को चपेट में लेने का खतरा होता है। अतः ऐसे पशुओं को स्वस्थ पशुओं से तुरंत अलग करके रखें। ई–कोलाई, सेलमोनेलोसिस, एस्परजिलोसिस, कोकिडियोसिस और परजीवियों से फैलने वाली अन्य बीमारियों की रोकथाम के लिए तुरंत चिकित्सकीय उपाय शुरू करने में देरी नहीं करनी चाहिए। **प्रो. (डॉ.) त्रिभुवन शर्मा, प्रसार शिक्षा निदेशक** (मो.09414264997)

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित धीणे री बात्यां के अन्तर्गत जुलाई, 2015 में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है।

क्र.स.	वार्ताकार का नाम व विभाग		वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	प्रो. कर्नल (डॉ.) ए.के.गहलोत कुलपति, राजुवास	9414138211	राजुवास के पांच वर्ष की उड़ान–प्रगति का सौपान	02.07.2015
2	डॉ. अशोक बेंदा वीयूटीआरसी, सूरतगढ	9462288448	डेयरी – एक उत्तम व्यवसाय	09.07.2015
3	डॉ. अरूण झीरवाल एल.पी.एम. विभाग,	9461300587	मुर्गीपालन किसानों के लिए अतिरिक्त आय का साधन	16.07.2015
4	डॉ. प्रमोद कुमार पशु प्रसूति एवं मादा रोग विभाग	9414541407	पशुओं में मद(ताव) के लक्षण एवं गर्भाधान हेतु उचित समय	23.07.2015
5	प्रो. जे.एस. मेहता पशु प्रसूति एवं मादा रोग विभाग	9414278372	भैंसों एवं गायों के ब्याहने में एक गम्भीर समस्या–बच्चे दानी में मरोड़	30.07.2015

पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि निर्धारित समय पर प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठायें।

मुस्कान !

संपादक
प्रो. त्रिभुवन शर्मा
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पशु पालन नए आयाम
मासिक अंक : जुलाई, 2015

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजूवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. त्रिभुवन शर्मा द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन विजय भवन पैलेस राजूवास बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. त्रिभुवन शर्मा